संवाद

पृष्ठ-सज्जा एवं सम्पादन

श्रद्धा शर्मा एवं प्रियंका गुलेरिया

पत्रकारिता, जनसंचार एवं नवमीडिया स्कूल, केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला. ८ मई, २०१५

तक्षशिला और नालंदा की ज्ञान परम्परा का वाहक होगा केंद्रीय विवि

सीयूएचपी, मई 7, श्रद्धा शर्मा

केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के नव नियुक्त कुलपति डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने प्राध्यापकों और और विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि नई तकनीक के साथ-साथ तक्षशिला और नालंदा की ज्ञान परंपरा का वाहक भी बनेगा केंद्रीय विश्वविद्यालय| करीब एक वर्ष के अंतराल बाद केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश को नियमित कुलपति की नियुक्ति हुई है।

नवांशहर (पंजाब) के रहने वाले डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने २० अप्रैल, २०१५ को हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति के रुप में कार्यभार ग्रहण किया। पूर्व कुलपति डॉ. योगेंद्र सिंह वर्मा, सभी संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों ने उनका स्वागत कर उन्हें बधाई दी। भारत तिब्बत सहयोग मंच सहित विभिन्न छात्र संगठनों के सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित रहे उन्हें बधाई दी।

छायांकन: अभिषेक

डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

डॉ. अग्निहोत्री ने प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विवि के लिए स्थाई परिसर का निर्माण करवाना उनकी प्राथमिकता है और समन्वेषी ज्ञान के विस्तार के लिए विवि में कुछ नवीन पाठयक्रम भी प्रारम्भ किए जाएंगे| उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्किल इंडिया प्रोग्राम को सम्बल प्रदान करने के लिए ठोस कदम उठाये जाएंगे| विवि के लिए अपनी योजनाओं के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, ''केंद्रीय विवि जिला या प्रदेश स्तर तक सिमट कर न रह जाये, इस लिए सबके साथ मिलकर विशेष प्रयत्न किये जाएंगे| हिमालय ज्ञान-विज्ञान का केंद्र रहा है और इसे फिर से ज्ञान-विज्ञान का केंद्र बनाने के लिए भरसक प्रयत्न किए जाएगें|

पूर्व में डॉ अग्निहोत्री बाबा बालक नाथ महाविद्यालय, चकमोह में प्रचार्य और हिमाचल प्रदेश विवि के क्षेत्रीय केंद्र धर्मशाला में बतौर निदेशक कार्य कर चुके हैं| कुलपति पद का कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व डॉ अग्निहोत्री पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, मोहाली में उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत थे। डॉ. अग्निहोत्री ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हासिल की। तत्पश्चात उन्होंने एस.एन कॉलेज बंगा, शिवालिक कॉलेज नंगल, सुलतानपुर लोधी कॉलेज, हिमाचल के बीबीएन कॉलेज में शिक्षण का कार्य किया। डॉ. अग्निहोत्री हिमाचल में डॉ. भीमराव अंबेडकर चेयर के चेयरमेन और भारत तिब्बत मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुकें हैं|

खतरे में नेट

सीयूएचपी, मई 7, प्रिया यादव

''हर एक दोस्त जरूरी होहता है'' जैसे लुभावनें विज्ञापनों से पैसे कमानें वाली टेलिकॉम कंपनियां आज यह कह कर ट्राई के साथ मिलकर नए नियम बनाना चाहती हैं कि उन्हें पर्याप्त फ़ायदा नहीं हो रहा है| विशेषज्ञों के अनुसार ये नए कानून नेट न्यूट्रालिटी के विरुद्ध होंगे|

साभार: गौरव मंडयाल

सबसे पहले तो यह जानना जरूरी है कि नेट न्यूट्रालिटी है क्या? और क्यों टेलिकॉम कंपनियां इसके विरुद्ध हैं और ऐसे नियम लाना चाहती हैं जो इसे ख़त्म कर सके|

शेष पृष्ठ 2 पर...

हाई रिस्क ज़ोन में है हिमाचल

सीयूएचपी, मई 7, श्रद्धा शर्मा

हिमाचल प्रदेश भूकंप की दृष्टि से सिस्मिक ज़ोन 4 और 5 में आता है। नेपाल में 7.9 की तीव्रता से आए भूकंप ने कांगड़ा में १९०५ में आये भीषण भूकंप की त्रासदी के भयानक मंज़र को जान चली फिर से ज़ेहन में उबार दिया है।

कांगड़ा में आए 7.8 की तीव्रता के भूकंप से हज़ारों लोगों की जान चली गई थी। धर्मशाला और मैक्लोडगंज में सबसे अधिक नुकसान हुआ था। यह घटना विश्व की दस बड़ी प्राकृतिक आपदाओं में शामिल की जाती है। लेकिन यहां के लोगों और सरकारों ने कोई सीख नहीं ली। यहां भूकंपरोधी भवन न के बराबर है। भूकंप आने पर पूरा धर्मशाला शहर मलबे में तबदील होने की आशंका है।

मैक्लोडगंज, धर्मशाला भूकम्प की दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील है

मैक्लोडगंज चौक से भागसुनाग और धर्मकोट को जाने वाले बेहद संकरे रास्ते के दोनों ओर काफी ऊँची-ऊँची इमारतें हैं। भूकंप आने पर चौक की इमारतें सड़क पर ही गिरेंगी जिससे यह दोनों क्षेत्र बचाव कार्य से अछूते रह जाएगें। इसके अलावा नड्डी गाँव भी भूकंप आने पर मुख्य सड़क से कट जाएगा। हिमाचल प्रदेश में भूकंप बड़ी तबाही मचा सकता है| सरकार और स्थानीय प्रशासन अगर भूकंप की दृष्टि से संवेदनशील धर्मशाला व मैक्लोडगंज में बेतरतीब भवन निर्माण कार्यों को नहीं रोकते है तो भविष्य में यह भयावह तबाही का कारक हो सकता है। भूकंप के नज़रिये से हिमाचल को दो ज़ोनो में बांटा गया है। एक ज़ोन ४ है तो दूसरा ज़ोन ५ है। ज़ोन ५ को "वेरी हाई डैमेज रिस्क ज़ोन'' कहा जाता है जबकि ज़ोन ४ को "हाई डैमेज रिस्क ज़ोन'' कहा जाता है। हिमाचल सहित समूचा हिमालीय क्षेत्र ज़ोन चार और पांच के तहत ही आता है। भूकंप की दृष्टि से हिमाचल के चंबा, कुल्लू, कांगड़ा, ऊना, हमीरपुर, मंडी और बिलासपुर जिले ज़ोन पांच में आते हैं। बाकी जिले लाहौल स्पीति, किन्नौर, शिमला, सोलन, और सिरमौर को ज़ोन चार में है। फलतः यहाँ के लोगों व प्रशासन को अधिक सचेत रहने की आवश्यकता है।

फोटो खींचो नौकरी पाओ!

छायांकन: अजय सिंह ठाकुर

सीयूएचपी, 8 मई 2015, अम्बिका शर्मा

फोटोग्राफी आज की जरूरत बन गयी है। बढ़ती जरूरतों के कारण फोटोग्राफी का दायरा भी पहले से काफी बढ़ गया है। यदि आपकी रुचि फोटोग्राफी और कैमरा उपकरणों में हैं तो आप इस क्षेत्र में कदम बढ़ा सकते हैं। इस शौक को उचित आधार देकर इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है। किसी अच्छे ट्रेनिंग सेंटर से सीख कर ही फोटोग्राफी को कैरियर बनाना आपके लिए फायदेमंद होगा। इस क्षेत्र में दो तरह के कोर्स हैं - छोटी अवधि के और लंबी अवधि के। अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं जरूरत के अनुसार आप डिग्री अथवा डिप्लोमा कोर्स में दाखिला ले सकते हैं। आप चाहें तो कॉलेज की पढ़ाई के साथ ही फोटोग्राफी की पढ़ाई छोटी अवधि के कोर्स द्वारा कर सकते हैं। एक अच्छा फॉटोग्राफर बनने के लिए बेसिक जानकारी होना जरूरी है जो कि किसी भी प्रतिष्ठित संस्थान से कोर्स करके ली जा सकती है। कोर्स करके आपको फोटोग्राफी की बारीकियाँ समझने में आसानी होगी। कोर्स करने के बाद अवसरों की कोई कमी नहीं है। इस क्षेत्र में सफलता के लिए सिर्फ थोड़ी पढाई और ढेर सारी मेहनत व लगन की जरूरत है।

संवाद टीम: प्रियंका गुलेरिया, श्रद्धा शर्मा, प्रिया यादव, शिवानी राणा, अंबिका शर्मा, अलका कटोच, आनन्द वर्धन सिंह, अतुल ठाकुर|

मानसरोवर – एक कैलाश हिमाचल में भी

मणिमहेश का विहंगम दृश्य

साभार: मुकुल महंत

सीयूएचपी, 8 मई 2015, प्रियंका गुलेरिया

यूँ तो देश की ज्यादातर पहाडियों में कहीं न कहीं शिव का कोई स्थान मिल जायेगा । शिव के निवास के रूप में सर्वमान्य कैलाश पर्वत के भी एक से अधिक प्रतिरूप पौराणिक काल से धार्मिक मान्यताओं में स्थान बनाए हुए हैं। तिब्बत मे मौजूद कैलाश मानसरोवर को सृष्टि का केंद्र कहा जाता है। मानसरोवर की यात्रा शारीरिक व प्राकृतिक, हर लिहाज से दुर्गम है। उससे थोडा ही पहले भारतीय सीमा में पिथौरागढ जिले में आदि कैलाश या छोटा कैलाश है। इसी तरह एक और कैलाश हिमाचल के चम्बा जिले में है। ये दोनों कैलाश बड़े कैलाश की ही तरह शिव के निवास स्थान हैं। धौलाधार, पांगी व जास्कर पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा यह पर्वत मणिमहेश कैलाश के नाम से प्रसिद्ध है। हजारों वर्षों से श्रद्धालु इस मनोरम शिव तीर्थ की यात्रा करते आ रहे हैं।

यहाँ मणिमहेश नाम से एक छोटा सा पवित्र सरोवर है जो समुद्र तल से लगभग १३ हज़ार ५०० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। इस सरोवर के पूरब में स्थित पर्वत को कैलाश कहा जाता है। इनके गगनचुम्बी हिमाच्छादित शिखर की ऊँचाई समुद्र तल से लगभग १८ हज़ार ६०० फुट है। मणिमहेश कैलाश क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले के भरमौर शहर में स्थित है। जानकारी के अनुसार 550 ईस्वी में भरमौर शहर के सूर्यवंशी राजाओं मरूवंश के राजा मरूवर्मा द्वारा बनवाया गया भरमौर स्थित मंदिर आज भी उस समय की स्थापत्य कला को संजोये अपना अस्तित्व बनाए हुए है। इसका तत्कालीन नाम ब्रहम्पुरा था, जो कालांतर में भरमौर बना। भरमौर के एक पर्वत शिखर पर भरमाणी देवी का मंदिर है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि 550वीं सदी में भरमौर नरेश मरूवर्मा भी दर्शन करने मणिमहेश कैलाश आते थे।

मौजूदा पारंपरिक वार्षिक मणिमहेश कैलाश यात्रा का संबंध 920 सदी से लगाया जाता है। उस समय मरूवंश के वंशज राजा साहिल वर्मा, शैल वर्मा भरमौर के राजा हुआ करते थे, जिनकी कोई संतान नहीं थी। एक बार 84 योगी इनकी राजधानी में पधारे। राजा की विनम्रता और आदर -सत्कार से प्रसन्न हुए योगियों के वरदान के फलस्वरूप राजा साहिल वर्मा के दस पुत्र और चम्पावती नाम की एक कन्या सहित ग्यारह संतान हुई। इस पर राजा ने प्रसन्न होकर इन चौरासी योगियों के सम्मान स्वरूप भरमौर में 84 मन्दिरों के एक समूह का निर्माण कराया । जिनमें से मणिमहेश के नाम से शिव मंदिर और लक्षणा देवी नामक एक देवी मंदिर विशेष महत्व रखते हैं। यह पूरा मंदिर समूह उस समय की सांस्कृतिक एवं स्थापत्य कला का बेहतरीन नमूना आज भी पेश करते हैं। राजा साहिल वर्मा ने यहाँ चंबा नामक राज्य बसाया| लोग यहाँ ठंडे बर्फ के जल से स्नान करते हैं और कैलाश के दर्शन करके ईश्वर का आशीर्वाद एवं अनुकम्पा प्राप्त करते हैं।

खतरे में नेट

.शेष पृष्ठ 1 आगे...

नेट न्यूट्रालिटी का मतलब है कि चाहे आपका टेलीकॉम ऑपरेटर कोई भी हो आप किसी मनपसंद वेबसाइट या एप का इस्तेमाल सामान्य गति से कर सकते है। अगर नेट न्यूट्रालिटी हटा दी जाती है तो नेट सेवाओं को कुछ भागो मे बाँट दिया जाएगा| जैसे कि सभी सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटें एक तरफ; वाट्सएप और हाईक जैसे एप एक तरफ और रेलवे पूछताछ जैसी वेबसाइट एक तरफ होंगी।

हर वेबसाइट के लिए आपको विशेष नेट पैक खरीदना होगा, जो ग्राहक की मुश्किले बढ़ा देगे। और कहीं अगर आपकी टेलीकॉम ऑपरेटर ने किसी वेबसाइट से डील की है तो आपकी मुश्किलें और भी बढ़ जाएंगी। उदाहरण के तौर पर अगर एयरटेल ने फ्लिपकार्ट के साथ समझौता किया है तो, फ्लिपकार्ट वेबसाइट खोलते समय ज्यादा स्पीड मिलेगी, लेकिन अमेज़न खोलते समय नही। इस वजह से न चाहते हुए भी आपको फ्लिपकार्ट पर ही खरीदरी करनी पड़ेगी। नेट न्यूट्रालिटी खत्म हो जाने से छोटी कंपनियों को नही बल्कि बड़ी कंपनियों को फायदा होगा। लोगों के रुख को देखते हुए सरकार, ट्राई एवं नेट सेवा प्रदाता कंपनियां इन नए नियमों पर पुनः विचार करने की बात कर रहीं हैं. नेट न्यूट्रालिटी खत्म होने से एक ऐसा स्थान खत्म हो जाएगा जहां सभी बराबर है तथा सभी को आजादी है।